मरूमेघ
किसान ई – पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
©2020 marumegh
ISSN:2456-2904

पशुओं के संक्रामक रोग – रोकथाम एवं उपचार

बुद्धा राम[1] गंगा राम माली[2] तुरफान खान[3] और मनीष बेरा[4]

[1]पशुपालन एवं प्रबंधन विभाग राजस्थान कृषि महाविद्यालय उदयपुर [2]कार्यक्रम सहायक, [3]फार्म प्रबधंक कृषि विज्ञान केंद्र गुडामालानी, [4]शोधार्थी शस्य विज्ञान विभाग राजस्थान कृषि महाविद्यालय उदयपुर

मवेशी या अन्य पशुधन के बीमार हो जाने पर उनका इलाज करने के लिए उन्हें तंदुरूस्त बनाये रखने का इंतजाम करना ज्यादा अच्छा है। कहावत प्रसिद्ध है "समय से पहले चेते किसान"। पशुधन के लिए साफ–सुथरा और हवादार घर, बथान, सन्तुलित खान पान तथा उचित देख भाल का इंतजाम करने पर उनके रोगग्रस्त होने का खतरा किसी हद तक टल जाता है। रोगों का प्रकोप कमजोर मवेशियों पर ज्यादा होता है। उनकी खुराक ठीक रखने पर उनके भीतर रोगों से बचाव करने की ताकत पैदा हो जाती है। बथान की सफाई परजीवी से फैलने वाले रोगों और छूतही बीमारियों से मवेशियों का रक्षा करती है। सतर्क रहकर पशुधन की देखभाल करने वाले पशुपालक बीमार पशु को झुंड से अलग कर अन्य पशुओं को बीमार होने से बचा सकते हैं। इसलिए पशुपालकों और किसानों को निम्नांकित बातों पर ध्यान देना चाहिए–

- पशुधन या मवेशी को प्रतिदिन ठीक समय पर भर पेट पौष्टिक चार–दाना दिया जाए। उनकी खुराक में सूखा चारा के साथ हरा चारा खल्ली दाना और थोड़ा– सा नमक शामिल करना जरूरी है।
- साफ बर्तन में ताजा पानी भरकर मवेशी को आवश्यकतानुसार पीने का मौका दें।
- मवेशी का बथान साफ और ऊँची जगह पर बनाए। घर इस प्रकार बनाएं कि उसमें सूरज की रौशनी और हवा पहुँचने की पूरी – पूरी गूंजाइश रहे। घर में हर मवेशी के लिए काफी जगह होनी चाहिए।
- बथान की नियमित सफाई और समय– समय पर रोगाणुनाशक दवाएँ जैसे फिनाइल या दूसरी दवा के घोल से उसकी धुलाई आवश्यक है।
- मवेशियों या दुसरे पशुधन के खिलाने की नाद ऊँची बनाई जाए। नाद के नीचे कीचड़ नहीं होनें दें।
- घर बथान से गोबर और पशु– मूत्र जितना जल्दी हो सके खाद के गड्ढे में हटा दिया जाए।
- बथान को प्रतिदिन साफ कर कूड़ा–करकट को खाद के गड्ढे में डाल दिया जाए।
- मवेशियों को प्रतिदिन टहलने दिया जाए
- मवेशियों के शरीर की सफाई पर पूरा–पूरा ध्यान दिया जाए।

मवेशियों में फैलनेवाले अधिकतर संक्रामक रोग (छूत की बीमारियाँ) एंडेमिक यानी स्थानिक होते हैं। ये बीमारियाँ एक बार जिस स्थान पर जिस समय फैलती है, उसी स्थान पर और उसी समय बार– बार फैला करती है। इसलिए समय से पहले ही मवेशियों को टिका लगवाना जरूरी है। टिका पशुपालन विभाग की ओर से उपलब्ध रहने पर नाम मात्र का शुल्क लगाया जाता है। खुरहा–मुहंपका का टिका प्रत्येक वर्ष पशु स्वास्थ्य रक्षा पखवाड़ा के अंतर्गत मुफ्त लगाया जाता है।

मवेशियों के प्रमुख रोग

मवेशियों के कई तरह के रोग फैलते हैं। मोटे तौर पर इन्हें निमनंकित तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है **क.** संक्रामक रोग या छूतही बीमारियाँ। **ख.** सामान्य रोग या आम बीमारियाँ। **ग.** परजीवी जन्य रोग।

संक्रामक रोग (छूत की बीमारियाँ)

संक्रामक रोग संसर्ग या छूआ – छूत से एक मवेशी से अनेक मवेशी से अनेक मवेशियों में फैल जाते हैं। किसानों को इस बात का अनुभव है कि ये छूत की बीमारियाँ आमतौर पर महामारी का रूप ले लेती है। संक्रामक रोग प्रायरू विषाणुओं द्वारा फैलाये जाते हैं, लेकिन अलग – अलग रोग में इनके प्रसार के रास्ते अलग – अलग होते हैं। उदहारणत – खुरपका रोग के विषाणु बीमार पशु की लार से गिरते रहते हैं तथा गौत पानी

में घुस कर उसे दूषित बना देते हैं। इस गौत पानी के जरिए अनेक पशु इसके शिकार हो जाते हैं। अन्य संक्रामक रोग के जीवाणु भी गौत पानी मृत के चमड़े या छींक से गिरने वाले पानी के द्वारा एक पशु से अनेक पशुओं को रोग ग्रस्त बनाते हैं। इसलिए यदि गांव या पड़ोस के गाँव में कोई संक्रामक रोग फैल जाए तो मवेशियों के बचाव के लिए निम्नाकिंत उपाय कारगर होते हैं –

सबसे पहले रोग के फैलने की सूचना अपने हल्के के पशुधन सहायक या ब्लॉक (प्रखंड) के पशुपालन पदाधिकारी को देनी चाहिए वे इसकी रोग–थाम का इंतजाम तुरंत करते हुए बचाव का उपाय बतला सकते हैं।अगर पड़ोस के गाँव में बीमारी फैली हो तो उस गाँव से मवेशियों या पशुपालकों का आवागमन बंद कर दिया जाए।सार्वजनिक तालाब या आहार में मवेशियों को पानी पिलाना बंद कर दिया जाए।सार्वजनिक चारागाह में पशुओं को भेजना तुरंत बंद कर देना चाहिए। इस रोग के आक्रांत पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग रखना चाहिए। संक्रामक रोग से भरे हुए पशु को जहाँ – तहाँ फेकना खतरे से खाली नहीं। खाल उतारना भी खतरनाक होता है। मृत पशु को जला देना चाहिए या 5–6 फुट गड्ढा खोद कर चूना के साथ गाड़ (विधिपूर्वक) देना चाहिए। जिस स्थान पर बीमार पशु रखा गया हो या मरा हो उस स्थान को फिनाइल की घोल से अच्छी तरह धो देना चाहिए या साफ– सुथरा का वहाँ चूना छिड़क देना चाहिए, ताकि रोग के जीवाणु या विषाणु मर जाएँ। खाल की खरीद – बिक्री करने वाले लोग भी इस रोग को एक गाँव से दुसरे गाँव तक ले जा सकते हैं। ऐसे समय में इसकी खरीद – बिक्री बंद रखनी चाहिए।

1. गलाघोंटू

यह बीमारी गाय – भैंस को ज्यादा परेशानी करती है। भेड़ तथा सुअरों को भी यह बीमारी लग जाती है। इसका प्रकोप ज्यादातर बरसात में होता है।

लक्षण – शरीर का तापमान बढ़ जाता है और पशु सुस्त हो जाता है। रोगी पशु का गला सूज जाता है जिससे खाना निगलने में कठिनाई होती है। इसलिए पशु खाना – पीना छोड़ देता है। सूजन गर्म रहती है तथा उसमें दर्द होता है। पशु को साँस लेने में तकलीफ होती है, किसी – किसी पशु को आफरा और उसके बाद पतला दस्त भी होने लगता है। बीमार पशु 6 से 24 घंटे के भीतर मर जाता है। पशु के मुंह से लार गिरती है।

चिकित्सा – संक्रामक रोग से बचाव और उनकी रोगथाम के सभी तरीके अपनाना आवश्यक है। रोगी पशु की तुरंत इलाज की जाए। बरसात के पहले ही निरोधक का टिका लगवा कर मवेशी को सुरक्षित कर लेना लाभदायक है।

2. जहरवाद (ब्लैक क्वार्टर)

यह रोग भी ज्यादातर बरसात में फैलता है। इसकी विशेषता यह है कि यह खासकर 6 महीने से 18 महीने के स्वस्थ बछड़ों को ही अपना शिकार बनाता है। इसको सूजवा के नाम से भी पुकारा जाता है।

लक्षण – इस रोग से आक्रांत पशु का पिछला पुट्ठा सूज जाता है। पशु लंगड़ाने लगता है। किसी किसी पशु का अगला पैर भी सूज जाता है। सूजन धीरे – धीरे शरीर के दूसरे भाग में भी फैल सकती है। सूजन में काफी पीड़ा होती है तथा उसे दबाने पर कूड़कूडाहट की आवाज होती है। शरीर का तापमान 104 से 106 डिग्री रहता है। बाद में सूजन सड़ जाती है। तथा उस स्थान पर सड़ा हुआ घाव हो जाता है।

चिकित्सा – पशु चिकित्सा के परार्मश से रोग ग्रस्त पशुओं की इलाज की जाए। बरसात के पहले सभी स्वस्थ पशुओं को इस रोग का निरोधक टिका लगवा देना चाहिए।

3. प्लीहा (एंथ्रेक्स)

यह भी एक भयानक संक्रामक रोग है। इस रोग से आक्रांत पशु की शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। इस रोग के शिकार मवेशी के अलावे भेड़, बकरी और घोड़े भी होते हैं।

लक्षण – तेज बुखार 106 डिग्री से 107 डिग्री तक। मृत्यु के बाद नाक, पेशाब और पैखाना के रास्ते खून बहने लगता है। आक्रांत पशु शरीर के विभिन्न अंगों पर सूजन आ जाती है। प्लीहा काफी बढ़ जाती है तथा पेट फूल जाता है।

चिकित्सा – संक्रामक रोगों की रोकथाम उनसे बचाव के तरीके अपनाए तथा पशु चिकित्सा की सेवाएँ प्राप्त करें। यह रोग भी स्थानिक होता है। इसीलिए समय रहते पशुओं को टिका लगवा देने पर पशु के बीमार होने का खतरा नहीं रहता है।

4. खुरंपका – मुहंपका (फूट एंड माउथ डिजीज)

यह छूत की बीमारियाँ है और इसका संक्रामण बहुत तेजी से होता है। यद्यपि इससे आक्रांत पशु के मरने की संभावना बहुत ही कम रहती है तथापि इस रोग से पशु पालकों को को काफी नुकसान होता है क्योंकि पशु कमजोर हो जाता है तथा पशु कार्यक्षमता की और उत्पादन काफी कम हो जाती है। यह बीमारी गाय, बैल और भैंस के अलावा भेड़ों को भी अपना शिकार बनाती है।

लक्षण – बुखार हो जाना, भोजन से अरुची, पैदावार कम जाना, मुहं और खुर में पहले छोटे – छोटे दाने निकलना और बाद में पाक कर घाव हो जाना आदि इस रोग के लक्षण हैं।

चिकित्सा – संक्रामक रोग की रोक–थाम के लिए बतलाए गए सभी उपायों पर अम्ल करें। मुहं के छालों को फिटकरी के 2 प्रतिशत घोल सा साफ किया जा सकता है। पैर के घाव को फिनाइल के घोल से धो देना चाहिए। पैर में तुलसी अथवा नीम के पत्ते का लेप भी फायदेमंद साबित हुआ है। गाँव में खुरहा – चपका फूटपाथ बनाकर उसमें से होकर आक्रांत पशुओं को गुजरना चाहिए। घावों को मक्खी से बचाना अनिवार्य है।

बचाव – पशु को साल में दो बार छरू माह के अंदर पर रोग निरोधक टिका लगवाना चाहिए।

5. पशु – यक्ष्मा (टी. बी.)

मनुष्य के स्वस्थ्य के रक्षा के लिए भी इस रोग से काफी सतर्क रहने की जरूरत है क्योंकि यह रोग पशुओं का संसर्ग में रहने वाले या दूध इस्तेमाल करने वाले मनुष्य को भी अपने चपेट में ले सकता है।

लक्षण – पशु कमजोर और सुस्त हो जाता है। कभी – कभी नाक से खून निकलता है, सूखी खाँसी भी हो सकती है। खाने के रुचि कम हो जाती है तथा उसके फेफड़ों में सूजन हो जाती है।

चिकित्सा – संक्रामक रोगों से बचाव का प्रबंध करना चाहिए। संदेह होने पर पशु जाँच कराने के बाद एकदम अलग रखने का इंतजाम करें। बीमारी मवेशी को यथाशीघ्र गो – सदन में भेज देना ही उचित है, क्योंकी यह एक असाध्य रोग है।

6. थनैला

दुधारू मवेशियों को यह रोग दो कारणों से होता है। पहला कारण है थन पर चोट लगना या थन का काट जाना और दूसरा कारण है संक्रामक जीवाणुओं का थन में प्रवेश कर जाता। पशु को गंदे दलदली स्थान पर बांधने तथा दूहने वाले की असावधानी के कारण थन में जीवाणु प्रवेश कर जाते हैं। अनियमित रूप से दूध दूहना भी थनैला रोग को निमंत्रण देना है साधारणत अधिक दूध देने वाली गाय दृ भैंस इसका शिकार बनती है।

लक्षण – थन गर्म और लाल हो जाना, उसमें सूजन होना, शरीर का तापमान बढ़ जाना, भूख न लगना, दूध का उत्पादन कम हो जाना, दूध का रंग बदल जाना तथा दूध में जमावट हो जाना इस रोग के खास लक्षण हैं।

चिकित्सा – पशु को हल्का और सुपाच्य आहार देना चाहिए। सूजे स्थान को सेंकना चाहिए। पशूचिकित्सक की राय से एंटीवायोटिक दवा या मलहम का इस्तेमाल करना चाहिए। थनैल से आक्रांत मवेशी को सबसे अंत में दुहना चाहिए।

7. संक्रामक गर्भपात

यह बीमारी गाय –भैंस को ही आम तौर पर होती है। कभी – कभी भेंड बकरी भी इससे आक्रांत हो जाते हैं।

लक्षण – पहले पशु को बेचौनी होती है और बच्चा पैदा होने के सभी लक्षण दिखाई देने लगते हैं। योनिमुख से तरल पदार्थ बहने लगता है। आमतौर पर पांचवे, छठे महीने ये लक्षण दिखाई देने लगते हैं और गर्भपात हो जाता है। प्राय जैर अंदर ही रह जाता है।

चिकित्सा – सफाई पर पूरा ध्यान देना चाहिए। बीमार पशुओं को अलग कर देना चाहिए। गर्भपात के बाद पिछला भाग गुनगुने पानी से धोकर पोंछ देना चाहिए। गर्भपात के भ्रूण को जला देना चाहिए जिस स्थान पर गर्भपात हो, उसे रोगाणुनाशक दवा के घोल से धोना चाहिए।

नोट – 6 से 8 महीने के पशु को इस रोग (ब्रूसोलेसिस) का टिका लगवा देने से इस रोग का खतरा कम रहता है।